

GILLETTE & L'ORÉAL, WOMEN USA

VOL. III

Kentucky • Louisiana • Maine • Maryland
Massachusetts • Michigan • Minnesota • Mississippi



FERDINANDO FREGA

GILLETTE & L'ORÉAL, WOMEN USA — VOL. III

L'ORÉAL THROUGH GILLETTE · 08

केंटकी, लुइज़ियाना, मेन, मैरीलैंड, मैसाचुसेट्स, मिशिगन, मिनेसोटा,
मिसिसिपी। अमेरिकी यात्रा का तीसरा पड़ाव, ओहायो घाटी से डेल्टा तक।

अध्याय शून्य — साझा आरंभ

यह आरंभिक अध्याय *Women of the United States* के छहों भागों में साझा है। इसे यहाँ पूरा दिया गया है, और समेटकर रखा गया है ताकि शृंखला को बिना दोहराव के क्रम से पढ़ा जा सके।

अध्याय शून्य

यहाँ दुनिया कोई इलाका नहीं है: यह एक सीमा है। उत्तरी ध्रुव स्वागत नहीं करता, माफ़ नहीं करता, ग़लती की कोई गुंजाइश नहीं छोड़ता। सफ़ेदी यहाँ एक निरपेक्ष सत्ता की तरह राज करती है, ख़ामोश और बिना स्मृति के। तापमान कोई मौसम का आँकड़ा नहीं है: यह एक शिकारी है। रात महीनों तक चलती है, विचारों को कुचल देती है, लोगों की रूपरेखा बिगाड़ देती है, उनकी इच्छाशक्ति निगल जाती है।

समुदाय गिने-चुने हैं, छोटे हैं, और बंद हैं। इनुइट, युपिक, आर्कटिक के लोग वहाँ रहते हैं जहाँ कोई भी रहना नहीं चुनेगा। यहाँ हर व्यक्ति समूह के अस्तित्व के लिए ज़रूरी है। अगर तुम काम के नहीं हो, तो तुम बोझ बन जाते हो। और जो बोझ बन जाते हैं, वे ख़ामोशी में, बर्फ़ में, एक ऐसे वातावरण के तर्क में गुम हो जाते हैं जो कोई रियायत नहीं देता।

वैज्ञानिक अट्टे एक और तरह की ठंडक जोड़ते हैं: पदानुक्रमों की ठंडक। यहाँ औरत एक दुर्लभ उपस्थिति है, एक विसंगति, जिसे या तो ढलना होगा या हार माननी होगी।

इस जगह “गुम हो जाने” की अवधारणा ही नहीं है। बस सफ़ेदी है, जो सब कुछ मिटा देती है।

इनडिट और युपिक महिलाएँ

आर्कटिक की लड़की को लाड़-प्यार नहीं मिलता: उसे तैयार किया जाता है। वह जल्दी ही ठंड, अँधेरे और भूख को सहना सीख जाती है। उसे क़बीले के काम का बनना होता है, क्योंकि यहाँ पहचान निजी नहीं होती। वह कार्यात्मक होती है। औरत परिवार और समुदाय का बोझ उठाती है: भोजन, आग, बच्चे, खालें, देखभाल। अधिकारों की बात कोई नहीं करता। नाजुकी की बात कोई नहीं करता। अवसाद है, पर उसका कोई नाम नहीं। हिंसा है, पर उसका कोई गवाह नहीं।

वैज्ञानिक अड्डों की महिला

पढ़ी-लिखी, सक्षम, अनुशासन की आदी। वह शोधकर्ता, तकनीशियन और डॉक्टर बनकर आती है। जल्दी ही उसे पता चल जाता है कि उत्तरी ध्रुव डिग्रियों को नहीं पहचानता। यहाँ सिर्फ़ मानसिक मज़बूती गिनी जाती है। पुरुषों के पदानुक्रम उस पर हावी रहते हैं, और कमज़ोरी के किसी भी संकेत को कमज़ोरी ही समझा जाता है। यह एक ऐसा वातावरण है जहाँ ताक़त काफ़ी नहीं होती: चरम आत्म-नियंत्रण चाहिए।

पश्चिमी “बाहरी” महिला

आज़ादी में पली-बढ़ी, वह यह मानकर आती है कि ठंड को जीत लेगी। पर यह जगह उसे तोड़ देती है: अकेलापन, छोटी-छोटी जगहें, अंतहीन ख़ामोशियाँ। अड्डे समुदाय नहीं हैं, वे यंत्र हैं। और पुरुषों के बनाए यंत्र के भीतर एक औरत को गुम न हो जाने के लिए लड़ना पड़ता है।

दुनिया के छोर तक की यात्रा

मेरा पड़ोसी अंतोनियो, जिसे सब नीनो कहते थे, बरसों से नॉर्थ केप की, आधी रात के सूरज की, बिना अँधेरे वाले महीनों की बातें करता था। यह एक सपना था जिसे वह जब में रखे फिरता था, किसी असंभव चीज़ की तरह। मई की एक सुबह मैंने उसकी घंटी बजाई और बस इतना कहा: “अपना सूटकेस तैयार करो।

मैं एक घंटे में लौटूँगा। हम 30 दिन में वापस आएँगे।” उसने मुझे हैरानी से, खुशी से देखा। उसकी पत्नी ने, चिंतित होकर, पूछा कि हमारी योजना क्या है। “एक सपने का पीछा,” मैंने जवाब दिया।

हम गाड़ी में बैठ गए। हमारी पत्नियाँ हमें ऐसे देख रही थीं जैसे हम पागल हों। पर यह यात्रा सच्ची थी। नीनो के पास पहले से ही सवालों की भरमार थी। “हम कहाँ जा रहे हैं? मुझे कितने पैसे साथ ले जाने चाहिए?” “आराम से,” मैंने उससे कहा। “हम 54 घंटे में वहाँ पहुँच जाएँगे। बस 5,000 किमी। हम नई रेंज रोवर में हैं। सफ़र का मज़ा लो।”

हर 300 किमी पर मुझे रुकना पड़ता था: वह मुझसे बारह साल बड़ा था, उसकी अपनी रफ़्तार थी। मेरे पास पानी और पेय थे; उसके पास कॉफ़ी और शरीर की ज़रूरतें। और हम जितना आगे बढ़ते गए, वह अपनी ज़िंदगी के बारे में उतना ही ज़्यादा बोलता गया। ऐसी बातें जो मैं कभी न जान पाता अगर वह अंतहीन सड़क न होती।

गाड़ी में अकेले दो आदमी, हमेशा औरतों की बातें करते हुए। वह सिर्फ़ अपनी पत्नी को जानता था। मैं हँसा। मैंने उसे तसल्ली दी: “हम सब ऐसे ही हैं।”

उसने मुझसे पूछा कि 60 घंटे गाड़ी चलाते हुए मैं होश में कैसे रह पाता हूँ। मैंने उसे रूस के बारे में बताया, जब 22 साल की उम्र में मैंने एक ऐसी औरत से मिलने के लिए 51 घंटे गाड़ी चलाई थी जिससे मैं कभी मिला नहीं था। “दूरियाँ सीमाएँ नहीं हैं,” मैंने उससे कहा, “वे बहाने हैं। मेरे पास कभी कोई बहाना नहीं रहा।”

सफ़ेदी में आगमन

हम नॉर्वे में दाखिल हुए। सड़क किनारे एक हॉस्टल। हम गाड़ी वहीं छोड़कर स्लेज से आगे बढ़ने वाले थे।

गाइड पूरी तरह ढकी हुई थी, अभेद्य। जब उसने अपना चश्मा उतारा, तब मुझे पता चला कि वह एक औरत है। एक नॉर्वेजियन औरत, ख़ामोश, सीधी, बर्फ़ जैसी। नीनो स्लेज के बीच में, वह आगे, और मैं अपने 190 सेमी के साथ पीछे, सबसे आखिर में।

अब भी दिन का उजाला था। मेरी घड़ी समय दिखा रही थी, पर यह नहीं बता रही थी कि रात है या सुबह। यह आधी रात का सूरज था। हम नॉर्थ केप पहुँच गए थे।

नीनो रो पड़ा। उसने मुझे गले लगा लिया। मैंने हँसते हुए उससे कहा, "संभलकर... लोग सोचेंगे कि हम गे हैं।" हम हँसे, पर हम दुनिया के छोर पर थे।

फिर आया पाला: -52°C ।

असली आर्कटिक में प्रवेश

वे हमें कपड़े बदलने के लिए एक धातु के कंटेनर में ले गए। बेहद भारी, गद्देदार सूट, उलझी हुई ज़िपों से बंद होने वाले।

गाइड का पैसा मैंने दिया। नीनो को कुछ आदमियों के साथ एक इग्लू में छोड़ दिया गया; मुझे दूसरे में एक परिवार के साथ: एक बूढ़ा आदमी, 70 से 80 के बीच, और 30 से 50 के बीच की तीन औरतें।

वह एक बंद दुनिया थी। सरल। क्रूर।

आदमी एक तरफ़ रहता था। औरतें काम की रफ़्तार बनाए रखती थीं। और शौचालय इग्लू से पाँच मीटर दूर एक टीला था: टट्टी ज़मीन छूने से पहले ही जम जाती थी। मेरा पहला पेशाब एक पीला आर्कटिक तारा बन गया। यह उत्तर था जो मुझे सलाम कर रहा था।

बीच की उम्र वाली औरत, माजी, थोड़ी-बहुत अंग्रेज़ी बोलती थी। बाक़ी सब इशारे थे, आँखें, हाथ। ठंड की भाषा।

जब मुझे समझ नहीं आ रहा था कि सूट कैसे इस्तेमाल करूँ, तो उसने, बिना सोचे, एक छिपी हुई ज़िप दिखाने के लिए मेरी जाँघों के बीच छुआ। न कोई बुरी नीयत थी, न कोई शर्म: बस काम। ज़िंदा रहना।

इग्लू में तीन दिन

वे खाना लाए। धुएँ में पकी मछली, कच्ची मछली, कॉड का कलेजा, व्हेल का पेट। और शार्क के गोले। कोई विकल्प नहीं था। कोई दूसरा रास्ता नहीं था। यह वही था जो प्रकृति देती है।

फिर मैंने पिया: एक लाल तरल। मुझे लगा शराब है। वह छाना हुआ, उबाला हुआ, मीठा किया हुआ व्हेल का खून था। मैंने उसे पी लिया। उसने मुझे ऐसी ताक़त दी जो मैंने पहले कभी महसूस नहीं की थी। एक आदिम ऊर्जा। मुझे लगा कोकीन है। नहीं। यह उत्तर था जो शरीर में उतर रहा था।

औरतें मुझे देखती रहीं। बूढ़ा शिकार पर निकल गया। मैं आराम करता रहा और खून पीता रहा। तीन दिन बिना फ़ोन, इंटरनेट, कंप्यूटर के, बिना नीनो के। बस मैं और वे।

रात नहीं थी। बस रोशनी, आग, बर्फ़ और साँस।

तीनों औरतें सोने के लिए लेट गईं। मैं जगह ढूँढ़ने लगा। सबसे छोटी ने अपनी बाँह उठाई और मुझे पास आने का इशारा किया। वे ठहाका मारकर हँस पड़ीं। मुझे समझ नहीं आया। उन्होंने कहा कि मैं उनका “क्रिसमस” हूँ।

यह कहने का एक तरीका कि मुझे अपना लिया गया था।

मैंने धन्यवाद कहने के लिए उन्हें कुछ पैसे देने की कोशिश की। उन्होंने मना कर दिया। उन्हें बस एक आलिंगन चाहिए था। और कैलाब्रियाई में कुछ शब्द, ताकि वे खुद को और करीब महसूस कर सकें।

वहाँ मैंने सच्चे उपहारों का मूल्य समझा: वे जिन्हें न खरीदा जा सकता है, न बेचा।

गाइड की विदाई

तीन दिन बाद गाइड आई। उसने तीनों औरतों से एक घंटे तक बात की। मैं बाहर था। मुझे समझ नहीं आया कि वे क्या कह रही थीं। यह मेरा मामला नहीं था। यह उनकी भाषा थी, उनकी दुनिया, उनका क़ानून।

कंटेनर में, जब मैं कपड़े उतार रहा था, गाइड अंदर आई। जिज्ञासु। सीधी। उत्तरी। उसने मुझे कसकर गले लगाया। उसने मुझे चूमा। उसकी त्वचा दूध जैसी सफ़ेद थी। उसकी आँखें अगस्त के आसमान जैसी नीली थीं।

उसने मुझसे कहा कि मैं उसे अपने साथ ले चलूँ। उस दुनिया से निकलने के लिए वह कुछ भी कर गुज़रती।

मैं आदर से मुस्कुराया। मैं ऐसा नहीं कर सकता था। मुझे ऐसा करना भी नहीं चाहिए था।

मैंने उसके पास सिर्फ एक वादा छोड़ा: "अगर तुम्हें कुछ भी चाहिए, मुझे एक चिट्ठी लिखना। मैं तुम्हारी मदद करूँगा।" उसने पैसे भी लेने से मना कर दिया। वह एक सुंदर औरत थी, पर अकेली। ऐसा अकेलापन जो दूर से दिखाई नहीं देता। ऐसा अकेलापन जिसे ठंड माफ़ नहीं करती।

घर वापसी

हम नीनो को लेने गए। वह रोमांचित था। वह वापस जाना नहीं चाहता था। पर मेरी उसकी पत्नी से मुलाकात तय थी।

उसने सबको अपने तीन दिनों के बारे में बताया। मैं चुप रहा। मैंने उस आदमी से कभी कुछ साझा नहीं किया। सिर्फ कागज़ से।

और इस तरह, जब नीनो अपनी दुनिया में लौट रहा था, मैं पहले ही दूसरी दुनिया की ओर निकल चुका था। एक और मंज़िल। एक और मुलाकात।

स्वागत है।

उपसंहार

उत्तर तुम्हें ले नहीं जाता: वह तुम्हें बदल देता है। और वह तुम्हें कभी

पूरा वापस नहीं लौटाता। मर्द उत्तरी ध्रुव पर रोशनी, खामोशी, तस्वीरें, सपने ढूँढने आते हैं। औरतें ज़िंदा रहने के लिए रुकती हैं।

मर्द बताते हैं कि उन्होंने क्या देखा। औरतें उस पर चुप रहती हैं जो उन्होंने जिया।

मर्द लौट जाते हैं। औरतें रह जाती हैं। वे ठंड में रह जाती हैं, बर्फ़ के घरों में, अनसुनी खामोशियों में। वे उन समुदायों को सहारा देने के लिए रह जाती हैं जो उनका गुणगान नहीं करते। वे बच्चों, बूढ़ों, अजनबियों की रक्षा के लिए रह जाती हैं। वे अदृश्य रह जाती हैं।

मैं वहाँ से सिर्फ एक स्मृति लेकर आया: एक सुंदर, बेहद सुंदर औरत, पर अकेली। रोमानी अर्थ में नहीं। मानवीय अर्थ में। त्रासद अर्थ में।

चिंतन

उत्तर शरीर को नहीं मारता। वह उपस्थिति को मारता है। और जो बचता है वह सफ़ेदी है: एक ऐसी जगह जहाँ औरतें एक ही समय में जीती भी हैं और गुम भी हो जाती हैं।

इसीलिए मैं लिखता हूँ। क्योंकि चरम जगहें अपनी कहानी खुद नहीं सुनातीं। और जो उनसे होकर गुज़रते हैं, वे चुप रहने की विलासिता नहीं उठा सकते।

मैं नहीं। मैं नहीं। मेरी धरती ने मुझे जन्म दिया, और बाक़ी दुनिया मेरा स्वागत किसी मेहमान की तरह नहीं, बल्कि परिवार के एक सदस्य की तरह करती है।

उत्तर की निरपेक्ष सफ़ेदी से मैं संयुक्त राज्य अमेरिका की निरपेक्ष उलझन में उतर आया।

संयुक्त राज्य अमेरिका

असंभव काम

अठारह साल एक अमेरिकी कंपनी के लिए काम करना तुम्हें वह देता है जो दुनिया की कोई और कंपनी नहीं दे सकती: एक कार्य-संस्कृति, प्रक्रियाएँ, एक स्पष्ट मिशन, और मूल्यों की एक व्यवस्था जो सिद्धांत नहीं है—वह रोज़ का अभ्यास है। वे उन्हें तुम्हें समझाते नहीं; वे उन्हें तुम्हारे भीतर गढ़ देते हैं। और वे यह तुम्हारी इजाज़त माँगे बिना करते हैं।

मैं न्यूयॉर्क के दफ़्तर में था जब मुझे एक ऐसा काम पेश किया गया जिसकी मैंने कभी कल्पना नहीं की थी। पदोन्नति नहीं। तबादला नहीं। एक प्रयोग।

एक गोपनीय कार्यक्रम, जो संयुक्त राज्य अमेरिका के भीतर मानवीय संबंधों के एक मॉडल को परखने के लिए बनाया गया था। उन्होंने मैनेजर, मनोवैज्ञानिक या प्रशिक्षक नहीं चुने थे। उन्होंने असली दुनिया के एक खास तरह के अनुभव वाले लोगों को चुना था। और मेरा नाम सामने आया—हालाँकि मैं अठारह साल से सेल्स में था। वे पद को नहीं देख रहे थे: वे दिमाग़ को देख रहे थे।

परीक्षा समझाने में सरल थी और पूरी करने में बेहद कठिन:

एक साल में अमेरिका के 50 राज्यों का दौरा करना, शहर खुद चुनते हुए और हर एक में कम से कम एक हफ़्ता रुकते हुए।

आखिरी दो हफ़्ते ज़बरदस्ती की छुट्टी होंगे। सारा खर्च वे उठाएँगे। मुझे बस जीना था, देखना था, समझना था, और हर सोमवार एक रिपोर्ट भेजनी थी। एक मानवीय, सूखा, सटीक ब्योरा।

मैंने अनुबंध पर दस्तखत कर दिए। मैंने घर पर ख़बर कर दी। उन्होंने कुछ नहीं पूछा। वे बस यह जानना चाहते थे कि महीने का राशन पहुँचा या नहीं। मैं अमेरिका में एक साल का सामना करने जा रहा था। वे, हमेशा की तरह, अगले महीने का सामना कर रहे थे।

एहतियात के तौर पर, मेरी तनख़्वाह सीधे इटली में मेरे बैंक खाते में जमा की जाती थी। यह मुझे से यह कहने का एक शिष्ट तरीक़ा था: “कोई बेवकूफी मत करना। जो तुम्हारे पास है उसी से जीना। देखते हैं तुम असल में कौन हो।”

सिर्फ़ पंद्रह साल बाद ही मुझे अपनी मूल रिपोर्टों, विश्लेषणों और उस सामग्री तक पहुँच मिली जो उन्होंने मेरे बारे में इकट्ठा की थी। यह किताब वहीं से जन्मी। मुझे इसे प्रकाशित करने की मंजूरी मिल गई, एक शर्त पर: उस कंपनी का नाम कभी न लेना जिसने इसे करवाया था।

इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। यह कहानी लोगो के बारे में नहीं है। यह एक ऐसे देश में एक आदमी के बारे में है जिसे खुद जिए बिना समझना असंभव है।

क्या मैं सबसे दूर के बिंदु से शुरू करूँ?

तार्किक चुनाव था हाशिये से शुरू करना, केंद्र से नहीं। दो सरल कारणों से:

1. मैं प्रयोग से ताज़ा-ताज़ा निकला था: पूरी स्पष्टता, अधिकतम ध्यान।
2. छोर से शुरू करके मैं रास्ता सुधार सकता था और यात्रा को साफ़-सुथरे ढंग से ख़त्म कर सकता था।

मुझे बोस्टन या शिकागो से शुरू करने की ज़रूरत नहीं थी। मुझे एक सरहद से शुरू करना था। एक ऐसी जगह से जो सिर्फ़ कागज़ पर अमेरिका थी।

मैंने जूनो चुना, अलास्का की राजधानी। कटा हुआ। सिर्फ़ नाव या हवाई जहाज़ से पहुँचने लायक़। एक ऐसा शहर जो किसी का नहीं है। शुरुआत के लिए एकदम सही जगह।

संसाधनों का सही उपयोग

निकलने से पहले मैंने वह किया जिसका एक अमेरिकी सबसे पहले सम्मान करता है: मैंने खुद को एक पेशेवर की तरह संगठित किया, किसी पर्यटक की तरह नहीं।

मैंने तीन सबसे लोकप्रिय एयरलाइनों को फ़ोन किया, जिनके घरेलू नेटवर्क सबसे बड़े थे। एक घंटे से भी कम में मैंने 60% छूट पर पचास घरेलू उड़ानों की एक टिकट-पुस्तिका ख़रीद ली।

कोई समय-सीमा नहीं। दिनों की कोई सीमा नहीं। कोई पाबंदी नहीं। बस एक शर्त: उन्हें एक साल के भीतर इस्तेमाल करना।

मैंने होटल चेनों, उबर टैक्सियों और कार किराये की कंपनियों के साथ भी यही किया, और फिर पड़ावों का, तरीक़ों का एक ठीक-ठाक कार्यक्रम बनाया, पर समय का नहीं।

मैं तैयार था।

यह मेरी पहली असली कामयाबी थी। पहला संकेत कि मुझे चलना-फिरना आता था। अमेरिका उन्हें इनाम देता है जो कुछ करते हैं, उन्हें नहीं जो इंतज़ार करते हैं।

जब कंपनी ने यह लेन-देन देखा, तो उसने वही किया जो एक अमेरिकी संस्कृति हमेशा करती है: उसने भरोसेमंदी जाँची।

क्या मैं लगातार आवाजाही का एक साल सँभाल सकता था? क्या मैं अप्रत्याशित घटनाओं, दूरियों और आपात स्थितियों से निपट सकता था? क्या मैं आत्मनिर्भर था?

इसीलिए, निकलने से पहले, मैंने एक और निर्णायक बात तय की:

मैंने यह सुनिश्चित किया कि मेरे क्रेडिट कार्ड पर हर महीने कम से कम \$100,000 की क्रेडिट सीमा हो।

यह खर्च करने के लिए नहीं था। यह दिखाने के लिए था कि हम उन्हें सँभाल सकते हैं। अमेरिकी ऐसे ही सोचते हैं: अगर तुम्हारे पास स्वायत्तता नहीं है, तो तुम्हारे पास आज़ादी नहीं है। और अगर तुम्हारे पास आज़ादी नहीं है, तो तुम्हारा मूल्यांकन नहीं हो सकता।

उस पल से कार्यक्रम अब एक काम नहीं रहा। वह एक मिशन बन गया।

और अब हम सचमुच यात्रा करते हैं

अलास्का सिर्फ भूगोल के हिसाब से संयुक्त राज्य अमेरिका का हिस्सा है। यह एक और ही दुनिया है।

यह वह जगह है जहाँ औरतें बिना कोई निशान छोड़े गुम हो जाती हैं। जहाँ कोई शिकायत कभी अपनी मंज़िल तक नहीं पहुँचती। जहाँ शहर एक जंगली महाद्वीप के बीच सभ्यता के टापू भर हैं।

जूनो मेरी पहली परीक्षा थी: एक राजधानी जिसे बाक़ी देश से कोई सड़क नहीं जोड़ती। अमेरिका का एक टुकड़ा जो अमेरिका जैसा नहीं लगता।

यहाँ मुझे कुछ समझ आने लगा: यह यात्रा भौगोलिक नहीं होगी। यह मानवीय होगी।

खंड 1 (भाग I)

अलाबामा – अलास्का – एरिज़ोना – अर्कांसस – कैलिफ़ोर्निया – कोलोराडो – कनेक्टिकट – डेलावेयर – फ़्लोरिडा – जॉर्जिया

खंड 2 (भाग II)

हवाई – आइडाहो – इलिनॉय – इंडियाना – आयोवा – कैनसस – केंटकी – लुइज़ियाना – मेन – मैरीलैंड

खंड 3 (भाग III)

मैसाचुसेट्स – मिशिगन – मिनेसोटा – मिसिसिपी – मिसौरी – मोंटाना – नेब्रास्का
– नेवाडा – न्यू हैम्पशायर – न्यू जर्सी – न्यू मेक्सिको

खंड 4 (भाग IV)

न्यूयॉर्क – वॉशिंगटन

खंड 5 (भाग V)

नॉर्थ कैरोलाइना – नॉर्थ डकोटा – ओहायो – ओक्लाहोमा – ओरेगन –
पेंसिल्वेनिया – रोड आइलैंड – साउथ कैरोलाइना

खंड 6 (भाग VI)

साउथ डकोटा – टेनेसी – टेक्सस – यूटा – वर्मॉन्ट – वर्जीनिया – वेस्ट वर्जीनिया
– विस्कॉन्सिन – वायोमिंग

केंटकी

केंटकी एक ऐसा राज्य है जो दो आयामों में मौजूद है: सतह पर कोयले की खदानें, व्हिस्की, घोड़े और हरी पहाड़ियाँ; पर गहराई में पुरानी गरीबी, अलग-थलग समुदाय, कठोर धर्म और दुर्लभ अवसर।

यह एक ऐसी धरती है जो अब ग्रामीण नहीं रही, पर अभी आधुनिक भी नहीं हुई। लटकी हुई। धीमी। थकी हुई। और जब कोई धरती लटकी होती है, तो उसे औरतें ही थामे रखती हैं।

केंटकी में औरत किसी एक घटना के कारण गायब नहीं होती। वह एक सामाजिक विरासत के कारण गायब होती है, जिसने पीढ़ियों से उससे खुद को कुर्बान करने की माँग की है। परिवार, बच्चे, अस्थिर काम, चर्च, पड़ोसी, दूसरों की समस्याएँ: सब कुछ उन्हीं के कंधों पर है। उसकी अनुपस्थिति शोर नहीं है। वह बोझ है।

पूर्व खनन क्षेत्रों की महिला – 41

वर्ष

कोयले ने केंटकी को बनाया और उसी ने उसे नष्ट कर दिया। खदानें बंद होती हैं, मर्दों की नौकरियाँ जाती हैं, रसायनों पर निर्भरता बढ़ती है, गरीबी फैलती है।

यहाँ की औरतें उसके बाद का सब कुछ थामे हुए हैं। – बिना नौकरी के पति – हताशा में पले बच्चे – बेहद कम मज़दूरी – दोस्तों और रिश्तेदारों को लीलते ओवरडोज़ – खीझे हुए समुदाय।

वे दुकानों में, स्कूलों में, सेवा देने वाली जगहों पर काम करती हैं, सहायक कर्मचारी बनकर। वे वह सब करती हैं जो टूटी हुई आर्थिक व्यवस्थाएँ अब नहीं करतीं।

उसकी अनुपस्थिति सामाजिक है: अगर वह औरत न होती, तो राज्य ढह जाता। पर कोई उसे पहचानता नहीं।

डर्बी और घोड़ों के प्रजनन की महिला – 36 वर्ष

केंटकी अपने घोड़ों और डर्बी के लिए मशहूर है। उस सुरुचिपूर्ण छवि के पीछे औरतों की एक पूरी फ़ौज है जो अस्तबल साफ़ करती है, जानवरों को सँभालती है, तड़के की पालियों में काम करती है, और हास्यास्पद मज़दूरी पर काम करती है।

चमक-दमक सामने है। पसीना पीछे।

उसकी अनुपस्थिति आर्थिक है: उसके बिना यह उद्योग नहीं चलता, फिर भी वह एक ऐसा पुर्जा बनी रहती है जिसे जनता और नेता अनदेखा करते हैं।

धर्म में फँसी महिला – 48 वर्ष।

केंटकी की कई काउंटियों में चर्च के पास राज्य से ज़्यादा ताक़त है।

औरत को होना चाहिए: – माँ – पत्नी – नैतिक आदर्श – सम्मानजनक उपस्थिति – समुदाय की आज्ञाकारी।

वह अपनी भूमिका से बाहर नहीं निकल सकती। वह खुद को नए सिरे से नहीं गढ़ सकती। वह संदेह या कमज़ोरी ज़ाहिर नहीं कर सकती।

उसकी अनुपस्थिति सांस्कृतिक है: वह खुद की नहीं है। वह उस जगह की धार्मिक कथा की है।

न्यूनतम मज़दूरी वाले काम की महिला – 29 वर्ष

केंटकी कम वेतन वाली नौकरियों पर पलता है। और वे सारी नौकरियाँ औरतों की हैं।

कैशियर, वेट्रेस, फ़र्श साफ़ करने वाली, नर्सिंग होम की कर्मचारी, स्कूल की सहायिकाएँ। अस्थिर पालियों, महँगे पेट्रोल, पालने को बच्चों और शून्य संभावनाओं में खपती ज़िंदगियाँ।

उसकी अनुपस्थिति आर्थिक और मानसिक है: उसे कोई रास्ता नहीं दिखता और कोई उसे रास्ता देता भी नहीं।

उपसंहार – केंटकी

केंटकी परंपरा, गरीबी, धर्म और कठिनाई का एक मोज़ेक है। औरतें उसकी रीढ़ हैं। और ठीक इसी वजह से वे अदृश्य हो जाती हैं।

यहाँ अनुपस्थिति एक सामूहिक आदत है। जीने का एक ढंग। एक ग़लत सामान्यता, जिस पर कभी सवाल नहीं उठाया जाता।

चिंतन – केंटकी

हर राज्य अनुपस्थिति का एक अलग चेहरा दिखाता है। केंटकी वह चेहरा दिखाता है जो आर्थिक पतन और अतीत से चिपकी परंपरा से पैदा होता है।

यहाँ औरत वह सब थामे रहती है जो मर्दों ने खो दिया, वह सब जो धर्म थोपता है, वह सब जिसे गरीबी स्थायी बना देती है।

वह सबसे मज़बूत कड़ी है, पर उसके साथ सबसे कमज़ोर कड़ी जैसा बर्ताव होता है।

और ठीक इसीलिए यह राज्य इस भाग में ज़रूरी है: यह दिखाने के लिए कि क्या होता है जब कोई समाज सब कुछ औरतों के कंधों पर छोड़ देता है और फिर ऐसे बर्ताव करता है मानो यह सामान्य हो।

लुइज़ियाना

लुइज़ियाना तीखे विरोधाभासों का राज्य है। यह संस्कृति है, संगीत, इतिहास, खान-पान, आध्यात्मिकता और पहचान है। पर यह गरीबी, अस्थिरता, लत, नस्लीय असमानता, तबाही मचाने वाले तूफ़ान, अव्यवस्थित राजनीति और एक नाजुक सामाजिक व्यवस्था भी है।

यह एक ऐसी जगह है जहाँ सुंदरता कुरूपता के साथ रहती है, बिना संतुलन के। यहाँ हर चीज़ के दो पहलू हैं: न्यू ऑर्लिंयंस उत्सव भी है और आघात भी, बैटन रूज राजनीति भी है और पतन भी, और ग्रामीण पैरिश समुदाय भी हैं और अकेलापन भी।

लुइज़ियाना में औरत संयोग से गायब नहीं होती। वह इसलिए गायब होती है क्योंकि एक अस्थिर धरती पर वही अकेली स्थिर आकृति है। और यही स्थिरता उसे खा जाती है।

उसकी अनुपस्थिति तीन भारी कारणों का नतीजा है: – गहरी जड़ें जमाए गरीबी

– बार-बार लौटने वाली पर्यावरणीय आपदाएँ

– कठोर सांस्कृतिक पितृसत्ता।

यहाँ औरतें परिवार चलाती हैं, मोहल्ले चलाती हैं, पूरे-पूरे समुदाय चलाती हैं। और जब बाक़ी सब दिखाई देते हैं, वह धुँधली पड़ती जाती है।

न्यू ऑर्लिंयंस की महिला – 35 वर्ष

न्यू ऑर्लिंयंस संगीत है, उत्सव है, अराजकता है और इतिहास है। पर यह देश के सबसे जटिल और कठिन शहरों में से एक भी है।

यहाँ काम करने वाली औरत एक साथ तीन मोर्चों पर जीती है: – शिकारी पर्यटन – शहरी हिंसा – अस्थिर अर्थव्यवस्था

काम करती है: – बार में – होटलों में – रेस्तराँ में – पर्यटक टूर में – सार्वजनिक सेवाओं में – लाइव संगीत में – रात की ज़िंदगी में

ज़रूरी मुस्कानें। कम मज़दूरी। ऊँचे किराए। भारी ग्राहक। थका देने वाले घंटे।

उसकी अनुपस्थिति नैतिक है: शहर उसकी ऊर्जा इस्तेमाल करता है और उसे निचोड़कर लौटा देता है।

हर कोई न्यू ऑर्लियंस का "जादू" चाहता है। जो उसे रचती हैं, उन्हें कोई पैसा नहीं देता।

गरीब पैरिशों की अफ्रीकी अमेरिकी महिला –

42 वर्ष न्यू ऑर्लियंस के बाहर ग्रामीण और गरीब लुइज़ियाना है। छोटे घर, कमज़ोर स्कूल, न्यूनतम सेवाएँ और हास्यास्पद मज़दूरी। यहाँ अफ्रीकी अमेरिकी औरत एक साथ तीन भूमिकाएँ निभाती है: – मज़दूर – माँ – समुदाय का सामाजिक स्तंभ।

वह जहाँ भी हो सके, काम करती है: – नर्सिंग होम – सुविधा स्टोर – फ़ास्ट-फूड की रसोइयाँ – सफ़ाई – अनौपचारिक देखभाल।

उसके बिना समुदाय नहीं चलता। फिर भी वह कम मज़दूरी, पुराने तनाव, नाममात्र की स्वास्थ्य सेवा और घरेलू हिंसा की लगातार मौजूदगी के साथ जीती है।

उसकी अनुपस्थिति ऐतिहासिक है: यह उसी ढाँचे से उतरी है जिसने पीढ़ियों से उसे हमेशा सामाजिक सीढ़ी के सबसे निचले पायदान पर रखा है।

तूफ़ानों से बच निकलने वाली महिला – 39 वर्ष

आयु

लुइज़ियाना में "स्थिर" ज़िंदगी जैसी कोई चीज़ नहीं होती। तूफ़ान सब कुछ बदल देते हैं: घर तबाह, नौकरियाँ गईं, परिवार बिछड़े, यादें खो गईं।

औरत ही वह है जो: – बच्चों को निकालती है – कागज़ात बचाती है – पानी में डूबा घर साफ़ करती है – शून्य से शुरू करती है – उन बीमा पॉलिसियों से जूझती है जो देर से भुगतान करती हैं या कभी नहीं – परिवार को शांत रखती है जबकि भीतर से वह ढह रही होती है।

मर्दों के लिए पुनर्निर्माण शारीरिक है। औरतों के लिए यह मनोवैज्ञानिक है। साल-दर-साल।

उसकी अनुपस्थिति पर्यावरणीय है: हर तूफ़ान उसकी ऊर्जा का एक टुकड़ा ले जाता है, जब तक लगभग कुछ नहीं बचता। इसकी भरपाई कोई उसे नहीं करता।

भारी परंपराओं की महिला – 51 वर्ष

लुइज़ियाना मज़बूत, गहरी जड़ों वाली, लगभग पवित्र परंपराओं पर पलता है।

औरत को होना चाहिए: – आदर्श माँ – घर की धुरी – बड़े परिवार की आधारशिला – चर्च में उपस्थिति – बुजुर्गों की देखभाल करने वाली – छोटों की मार्गदर्शक – हर चीज़ को थामने वाला ढाँचा।

यह एक प्राचीन भूमिका है, जिसे कभी बदला नहीं गया।

वह परिवार की माँगें ठुकरा नहीं सकती। वह पलटकर जवाब नहीं दे सकती। वह “नहीं” नहीं कह सकती। वह अपराध-बोध महसूस किए बिना अपने बारे में नहीं सोच सकती।

उसकी अनुपस्थिति सांस्कृतिक और भावनात्मक है: वह सबको सँभालने में इतनी व्यस्त है कि खुद से ही गायब हो जाती है।

उपसंहार – लुइज़ियाना

लुइज़ियाना सुंदरता और न भरे घावों का मिश्रण है। और इस रोज़मर्रा की अराजकता के बीच औरतें सब कुछ जोड़े रखती हैं: परिवार, काम, समुदाय, परंपराएँ, भावनात्मक अस्तित्व।

उनकी अनुपस्थिति एक विरोधाभास है: वे जितना ज़्यादा करती हैं, उतना ही कम दिखाई देती हैं।

लुइज़ियाना औरतों को किसी एक ताक़त से नहीं मिटाता। वह उन्हें हज़ार छोटी, रोज़ की ताक़तों से मिटाता है: गरीबी, तूफ़ान, पर्यटन, नस्लीय इतिहास, पारिवारिक भूमिकाएँ, सहारे की कमी।

यह एक धीमा, गहरा, ख़ामोश मिटना है।

चिंतन - लुइज़ियाना

हर राज्य अनुपस्थिति का एक अलग रूप दिखाता है। लुइज़ियाना वह रूप दिखाता है जो इनसे पैदा होता है: – प्राकृतिक आपदाएँ – सामाजिक आपदाएँ – पारिवारिक आपदाएँ।

यह वह राज्य है जहाँ औरत सबके लिए जीती रहती है, पर उसके लिए कोई नहीं जीता।

यह वह राज्य है जहाँ आघात दिनचर्या बन जाता है और दिनचर्या पहचान बन जाती है।

लुइज़ियाना दिखाता है कि औरतों की अनुपस्थिति सिर्फ गरीबी या अधिकारों की कमी नहीं है। यह एक ऐसी थकान भी है जो इतनी गहरी है कि अब कोई उसे देखता तक नहीं।

और इसीलिए यह अध्याय निर्णायक है: यह याद दिलाने के लिए कि न्यू ऑर्लिंस के हर पोस्टकार्ड के पीछे एक औरत है जो कुछ ऐसा थामे हुए है जिसे दुनिया देख नहीं सकती।

मेन

मेन अमेरिका के सबसे सुंदर और सबसे बीहड़ राज्यों में से एक है। अंतहीन जंगल, ठंडे तट, प्रकाशस्तंभ, मछुआरों के गाँव और विराट खामोशी। यह सिर्फ घूमने आने वालों के लिए रूमानी धरती है। जो वहाँ रहते हैं, उनके लिए यह शुद्ध अकेलापन है।

आबादी बिखरी हुई है, दूरियाँ लंबी हैं, सर्दियाँ महीनों चलती हैं, अवसर कम हैं। मेन तुम पर हमला नहीं करता: वह तुम्हें घिस देता है।

यहाँ औरतें तीन कारणों से गायब होती हैं: – भौगोलिक अकेलापन – अस्थिर मौसमी नौकरियाँ – छोटे समुदाय जो बदलाव का गला घोट देते हैं। यह एक ऐसा राज्य है जहाँ प्रकृति हावी है और इंसान ढल जाता है। हमेशा। ज़रूरत से ज्यादा।

मेन की औरत किसी झटके से नहीं गिरती। वह दोहराव से गिरती है।

मछुआरों के गाँवों की महिला - 39 वर्ष

मेन का तट मछली पकड़ने पर पलता है: लॉबस्टर, कॉड, छोटे मौसम और कड़ी मेहनत।

यहाँ औरत वह सब सँभालती है जो नाव नहीं सँभालती: - तालमेल - मरम्मत के लिए जाल - बिक्री - परिवार का हिसाब-किताब - परिवार - घर - अचानक की आपात स्थितियाँ।

समुद्र दूर से सुंदर है। पास से वह एक निर्दयी मालिक है।

उसकी अनुपस्थिति आर्थिक भी है और शारीरिक भी: वह एक ऐसे क्षेत्र में जीती है जहाँ कमाई मौसम, ऋतु और क्रिस्मत पर निर्भर है। और जब मौसम खत्म होता है, सुरक्षा भी खत्म हो जाती है।

लंबी सर्दी में जीने वाली महिला - 52

वर्ष

सर्दियों में मेन एक दीवार है: बर्फ़, पाला, अँधेरा, अनंत खामोशियाँ।

भीतरी इलाकों में—मिलिनॉकेट, ग्रीनविल, लेक डिस्ट्रिक्ट—औरतें सामना करती हैं: - बिना असली सामाजिक संपर्क के महीनों का- खतरनाक सड़कों का- अलग-थलग घरों का- नाममात्र की स्वास्थ्य सेवा का- व्यापक मौसमी अवसाद का- ज़रूरी सेवाओं से दूरी का

अगर वह बीमार है, तो इंतज़ार करती है। अगर उसे डॉक्टर चाहिए, तो घंटों गाड़ी चलाती है। अगर वह भावनात्मक रूप से टूट जाती है, तो कोई उसे नहीं देखता। उसकी अनुपस्थिति भौगोलिक है: वह गायब हो जाती है क्योंकि वह हर चीज़ से दूर है।

मौसमी नौकरियों वाली महिला - 28 वर्ष

गर्मियों में मेन फट पड़ता है: पर्यटन, बी एंड बी, रेस्तराँ, कूड़ा।

यहाँ औरत बिना थके काम करती है: - परोसना - सफ़ाई - खाना बनाना - स्वागत करना - सँभालना - समेटना।

यह कठिन, कम वेतन वाला, अस्थिर काम है। यह तीन महीने चलता है, फिर कुछ नहीं।

वह गहन घंटों से ख़ाली हफ़्तों तक जाती है। तेज़ी से आते पैसे से गुज़ारे के महीनों तक।

उसकी अनुपस्थिति आर्थिक है: वह हमेशा दो मौसमों के बीच जीती है पर किसी की नहीं होती।

छोटे समुदायों की महिला – 46 वर्ष

मेन के छोटे क़स्बे बंद समुदाय हैं: हर कोई हर किसी के बारे में सब कुछ जानता है, और कोई कभी सचमुच नहीं बदलता।

यहाँ औरत को सीधी-सादी होना चाहिए: – माँ – स्थिर कामगार – भरोसेमंद उपस्थिति – स्थानीय नियमों के अनुसार "अच्छी इंसान"।

वह खुद को नए सिरे से नहीं गढ़ सकती। वह आसानी से नौकरी नहीं बदल सकती। वह बिना आँकी गए समुदाय नहीं छोड़ सकती।

उसकी अनुपस्थिति सांस्कृतिक है: वह खुद से ज़्यादा उस इलाक़े की है। वह दुष्टता की नहीं, आदत की कैदी है।

उपसंहार – मेन

मेन एक ऐसा राज्य है जो तुम्हें ख़ामोशी से देखता है। और ख़ामोशी, जब ज़रूरत से ज़्यादा हो, बोझ बन जाती है।

यहाँ औरतें दूरियों में, मौसमों में, दोहराई जाती भूमिकाओं में, अस्थिर नौकरियों में, बंद गाँवों में, लंबी सर्दियों में गायब हो जाती हैं।

अनुपस्थिति स्पष्ट नहीं है। वह त्वचा के नीचे है। वह रोज़ की बात है।

मेन चोट नहीं करता। वह तुम्हें जाने देता है।

चिंतन - मेन

हर राज्य अनुपस्थिति का कोई न कोई रूप दिखाता है। मेन वह रूप दिखाता है जो भूगोल से जन्म लेता है:

इलाक़ा जितना सुंदर, वहाँ रहने वालों के लिए जीवन उतना ही कठिन।

यहाँ महिला को संघर्ष नहीं मिटाता, बल्कि ख़ामोशी मिटाती है। दोहराव मिटाता है। दूरी मिटाती है। वह ठंड मिटाती है जो कभी जाती नहीं। वह जीवन मिटाता है जो सिकुड़ता जाता है।

मेन एक बात सिखाता है: स्त्री की अनुपस्थिति एक भूदृश्य भी हो सकती है। एक नक्शा। एक ऐसा मौसम जो कभी ख़त्म नहीं होता।

और इसीलिए यह अध्याय ज़रूरी है: क्योंकि अमेरिका सिर्फ़ हिंसा या अराजकता नहीं है। वह एक निगल जाने वाली ख़ामोशी भी है।

मेरीलैंड

मेरीलैंड एक भ्रामक राज्य है। छोटा, अटलांटिक के किनारे, वॉशिंगटन के पास। ऊपर से सुरुचिपूर्ण, भीतर से जटिल।

यह दो हिस्सों में बँटा इलाक़ा है: – अमीर, पढ़े-लिखे, सुरक्षित, व्यवस्थित उपनगर – कठिन, गरीब शहर, जिन पर अपराध और उपेक्षा की छाप है।

यह अमेरिका में सबसे ऊँची औसत आय वाले राज्यों में से एक है और साथ ही सबसे स्पष्ट असमानताओं वाले राज्यों में से भी एक।

यहाँ महिलाएँ किसी एक कारण से गायब नहीं होतीं। वे इसलिए गायब होती हैं क्योंकि उन्हें बहुत सारी दुनियाओं के अनुसार ढलना पड़ता है: महानगर, उपनगर, राजनीति, स्वास्थ्य सेवा, शहरी गरीबी, नस्लीय पहचानें।

मेरीलैंड में महिलाओं की अनुपस्थिति के कई रूप हैं।

वह पिन कोड के हिसाब से बदलती है।

बाल्टीमोर की महिला – 34 वर्ष

बाल्टीमोर संयुक्त राज्य अमेरिका के सबसे उलझी हुए शहरों में से एक है: जड़ जमाई गरीबी, ऊँचा अपराध, सामाजिक अलगाव, बोझ से दबी सेवाएँ और जोखिम में पड़े स्कूल।

यहाँ महिलाएँ सब कुछ थामे रखती हैं: – बच्चे – अस्थायी काम – खतरनाक मोहल्ले – असहनीय जीवन-यापन का खर्च – धीमा परिवहन – असली सुरक्षा का अभाव।

वह जहाँ भी काम मिले, करती है: सुपरमार्केट, क्लीनिक, सहायता केंद्र, फ़ास्ट-फूड रेस्तराँ, वृद्धाश्रम, सफ़ाई। उसकी अनुपस्थिति शहरी है: शहर “पुनर्विकास” की बात करता है, पर कभी उसके जीवन से शुरुआत नहीं करता।

व्यवस्था को वह तभी दिखती है जब वह श्रम-शक्ति के रूप में काम आती है। जब उसके अधिकारों को मानने की बात आती है, वह गायब हो जाती है।

अमीर उपनगरों की महिला – 42 वर्ष

मैरीलैंड का अमीर हिस्सा परफ़ेक्ट है: फ़िल्मों जैसे घर, ऊँची आमदनी, संभ्रांत स्कूल, महत्वाकांक्षी करियर, सुव्यवस्थित परिवार।

यहाँ की महिला एक अलग कारण से गायब होती है: परफ़ेक्ट होने का दबाव।

यह एक प्रतिस्पर्धी माहौल है जहाँ स्त्री की भूमिका बेदारा होनी चाहिए: – परिवार का पूरा प्रबंधन – ऊँची सामाजिक छवि – परफ़ेक्ट बच्चे – अनिवार्य स्वयंसेवा – साथ में नौकरी या करियर, जो कभी साथी पर “भारी” न पड़े।

वह ऐसे परिवेश में जीती है जो चाहता है कि वह हमेशा मौजूद रहे, कभी हार न माने, कभी थकान न दिखाए।

उसकी अनुपस्थिति पहचान का मामला है: समुदाय उसे एक भूमिका मानता है, एक इंसान नहीं।

मध्य इलाकों की अफ़्रीकी अमेरिकी महिला

कॉरिडोर – 45 वर्ष। मैरीलैंड में संयुक्त राज्य अमेरिका के सबसे बड़े और सबसे प्रभावशाली अफ़्रीकी अमेरिकी समुदायों में से एक है।

यहाँ महिलाएँ समाज की प्रेरक शक्ति हैं: – वे स्वास्थ्य सेवा में काम करती हैं – वे स्कूलों में काम करती हैं – वे दफ़्तर और सार्वजनिक प्रशासन चलाती हैं – वे बड़े परिवारों को जोड़े रखती हैं – वे पूरे समुदायों को सहारा देती हैं। पर वह दोहरा बोझ ढोती है: नस्ल का और लिंग का।

वह सब कुछ करती है। सब कुछ थामे रखती है। हर जगह दिखती है। पर उसकी बात शायद ही कभी सुनी जाती है।

उसकी अनुपस्थिति राजनीतिक है: वह राज्य को सहारा देती है, पर उन मेज़ों पर नहीं बैठती जहाँ फ़ैसले होते हैं।

स्वास्थ्य सेवा में काम करने वाली महिला – 37 वर्ष

वॉशिंगटन से नज़दीकी और बड़े क्षेत्रीय अस्पतालों की वजह से मैरीलैंड उन राज्यों में से एक है जहाँ स्वास्थ्य सेवा में काम करने वाली महिलाओं की संख्या सबसे ज़्यादा है।

यहाँ महिलाएँ एक ऐसी व्यवस्था के भीतर जीती हैं जो माँगना कभी बंद नहीं करती: – अंतहीन शिफ्टें – बोझ से लदे वार्ड – बार-बार की आपात स्थितियाँ – बेहद ऊँची ज़िम्मेदारियाँ – नाममात्र की मानसिक सुरक्षा – ऐसा वेतन जो भावनात्मक असर की भरपाई नहीं करता।

वही सबका इलाज करती है: बुजुर्गों का, बच्चों का, पुराने रोगियों का, शहरी आपात स्थितियों का, पर्यावरणीय आपदाओं का।

उसकी अनुपस्थिति कामकाजी है: वह बुनियादी है, पर स्वास्थ्य से जुड़े फ़ैसलों में उसकी आवाज़ का वज़न असाधारण रूप से कम है।

उपसंहार – मैरीलैंड

मैरीलैंड तीखे विरोधाभासों पर बना राज्य है: चरम अमीरी और चरम गरीबी, ऊँचे स्तर की राजनीति और उपेक्षित मोहल्ले, चमकदार करियर और मामूली नौकरियाँ। यहाँ की महिलाएँ ये सारे विरोधाभास एक साथ जीती हैं। मैरीलैंड के हर इलाक़े में मिटाए जाने का एक अलग रूप है: शहरी, सामाजिक, पहचान से जुड़ा, नस्लीय और स्वास्थ्य से जुड़ा।

उनकी अनुपस्थिति एक सामूहिक परिणाम है: राज्य इसलिए चलता है क्योंकि वे डटी रहती हैं।

और ठीक इसीलिए वे दिखाई नहीं देती।

चिंतन – मैरीलैंड

हर राज्य महिलाओं की अनुपस्थिति का एक अलग पहलू दिखाता है। मैरीलैंड सबसे जटिल पहलू दिखाता है: महिलाएँ हर सामाजिक स्तर पर मौजूद हैं, फिर भी ठीक वहीं अनदेखी की जाती हैं जहाँ व्यवस्था आकार लेती है।

यहाँ महिलाएँ हैं: – अमीर उपनगरों की रीढ़ – अश्वेत समुदायों का इंजन – स्वास्थ्य सेवा देने वाली – गरीब मोहल्लों का जीवित बचे रहना।

फिर भी उसे राजनीतिक शक्ति नहीं माना जाता, उसे रणनीतियों के केंद्र में नहीं रखा जाता, उसकी रक्षा नहीं की जाती।

मैरीलैंड में अनुपस्थिति गरीबी या अकेलापन नहीं है। वह असंतुलन है: महिलाएँ राज्य को जितना देती हैं, राज्य उससे कहीं कम लौटाता है।

और इसीलिए इस खंड में इसकी जगह है।

मैसाचुसेट्स

मैसाचुसेट्स अमेरिका के सबसे बुद्धिमान राज्यों में से एक है। संभ्रांत विश्वविद्यालय, विश्वस्तरीय अस्पताल, शोध केंद्र, तकनीक और नवाचार। बाहर से यह देश की सबसे उन्नत और “सही” जगहों में से एक लगता है: ऊँची शिक्षा, ऊँची आमदनी, आधुनिक नीतियाँ और व्यापक सेवाएँ।

पर सच्चाई ज़्यादा जटिल है।

मैसाचुसेट्स दो रफ़्तारों वाला इलाक़ा है: – वे जो ज्ञान के घरों का हिस्सा हैं – वे जो उन दरवाज़ों के बाहर रह जाते हैं।

यह राज्य प्रगति की बात करता है, पर एक भारी सांस्कृतिक दबाव में जीता है। और वह दबाव धीरे-धीरे महिलाओं की उपस्थिति को कुचल देता है।

यहाँ महिलाएँ किसी कमी की वजह से गायब नहीं होतीं। वे अपेक्षाओं की अति की वजह से गायब होती हैं: करियर, परिवार, ऊँचे मानक, लगातार प्रदर्शन, परफ़ेक्ट सामाजिक आदर्श।

मैसाचुसेट्स में महिलाओं की अनुपस्थिति आधुनिक है, सुसंस्कृत है, परिष्कृत है —और विनाशकारी है।

संभ्रांत विश्वविद्यालय की महिला - 33 वर्ष

मैसाचुसेट्स दुनिया का अकादमिक दिल है। ज्ञान का भविष्य उन्हीं कैपसों के भीतर तय होता है।

महिला शोधकर्ता बेहद ऊँची क्षमताओं के साथ आती है, पर खुद को एक ऐसी व्यवस्था के सामने पाती है जो माँगती है:

– बिना रुके प्रकाशित करो – संरक्षित सहकर्मियों से मुकाबला करो – सम्मेलन, सेमिनार, बड़े आयोजन करो – हमेशा चमकदार छवि बनाए रखो – बरसों तक अपनी निजी जिंदगी छोड़ दो

माहौल प्रगतिशील दिखता है, पर सत्ता के पद पुरुषों के ही रहते हैं। जो शोध करती हैं, वे उत्कृष्टता की हवा में साँस लेती हैं... और घिसाव की भी।

उसकी अनुपस्थिति संस्थागत है: वह ज्ञान पैदा करती है, पर शायद ही कभी आदेश देती है।

सफ़ाई और खानपान में काम करने वाली प्रवासी महिला - 29 वर्ष

अपने तस्वीर जैसे परफ़ेक्ट कैपसों के बाहर, मैसाचुसेट्स प्रवासी श्रम पर पलता है: लातीनी, हैती की, ब्राज़ील की, केप वर्डे की, अफ़्रीकी महिलाएँ।

यही वे हैं जो: – संभ्रांत वर्ग के दफ़्तर साफ़ करती हैं – विश्वविद्यालय के रेस्तराँ में खाना पकाती हैं – होटलों में शिफ़्टों में काम करती हैं – बोस्टन के रेस्तराँ की रसोइयाँ चलाती हैं – बुजुर्गों की देखभाल करती हैं – दूसरों के बच्चों को सँभालती हैं।

कठिन जिंदगियाँ, कम कमाई, आसमान छूते किराए।

उसकी अनुपस्थिति आर्थिक और राजनीतिक है: वह अमेरिका के सबसे पढ़े-लिखे शहर को चलाए रखती है, और कोई उसे पहचानता तक नहीं।

क्लीनिकों और अस्पतालों की महिला – 41 वर्ष

मैसाचुसेट्स उन्नत स्वास्थ्य सेवा का केंद्र है। बड़े नामों के पीछे हज़ारों महिलाएँ हैं: नर्स, तकनीशियन, वार्ड कर्मचारी, सहायक और सहयोगी स्टाफ़।

असंभव शिफ़्टें। लगातार तनाव। भारी ज़िम्मेदारियाँ। कठिन मरीज़। बेहद ऊँचा जीवन-यापन का खर्च। बहुत कम आराम।

उसकी अनुपस्थिति कामकाजी है: वह अमेरिका की सबसे अच्छी स्वास्थ्य सेवा का इंजन है, पर व्यवस्था उसे इंसान के रूप में नहीं देखती: सिर्फ़ एक काम के रूप में।

कठिन मोहल्लों की महिला – 35 वर्ष

समृद्ध कैपसों और उपनगरों से परे, मैसाचुसेट्स में असली, कठोर गरीबी है जो मीडिया को दिखाई नहीं देती।

यहाँ रहने वाली महिला झेलती है: – न चुकाए जा सकने वाले किराए – कमज़ोर स्कूल – फैली हुई हिंसा – अपर्याप्त सेवाएँ – अस्थिर परिवहन – कम वेतन वाली नौकरियाँ – ढाँचागत नस्लीय भेदभाव।

वह रोज़ की उत्तरजीवी है।

उसकी अनुपस्थिति शहरी है: वह मैसाचुसेट्स की “परफ़ेक्ट” कहानी में फ़िट नहीं बैठती, इसलिए व्यवस्था उसे अनदेखा करती है।

उपसंहार – मैसाचुसेट्स

यह राज्य एक साफ़ विरोधाभास है: यह जितना सुसंस्कृत है, उतना ही महिलाओं से उम्मीद करता है कि वे सब कुछ सँभालें।

यहाँ अनुपस्थिति अज्ञान नहीं है। वह अति-उत्कृष्टता है। यह विश्वास है कि एक विकसित इलाक़े में “सब ठीक हो जाएगा।”

सब ठीक नहीं है।

महिलाएँ भारी और अदृश्य बोझ उठाती हैं: अकादमिक, स्वास्थ्य से जुड़े, पारिवारिक, आर्थिक।

मैसाचुसेट्स इसलिए चलता है क्योंकि वे काम करती हैं। और ठीक इसीलिए वे गायब हो जाती हैं।

चिंतन – मैसाचुसेट्स

हर राज्य एक अलग घाव दिखाता है। मैसाचुसेट्स वह घाव दिखाता है जो उसकी संस्कृति के नीचे छिपा है।

यहाँ महिलाएँ इसलिए नहीं मिटाई जातीं कि उनके पास अवसर नहीं हैं। वे इसलिए मिटाई जाती हैं कि उनके पास बहुत ज़्यादा अवसर हैं, और उनका सामना करते समय कोई उनकी रक्षा नहीं करता।

यह एक आधुनिक मिटाया जाना है: हिंसा रहित, शोर रहित, अस्पष्ट। पर पूरा।

और इसीलिए मैसाचुसेट्स एक ज़रूरी अध्याय है: यह याद रखने के लिए कि प्रगति काफ़ी नहीं है, अगर वह उन्हें सचमुच मुक्त नहीं करती जो उसे थामे हुए हैं।

मिशिगन

मिशिगन औद्योगिक अमेरिका का कंकाल है। वह राज्य जिसने ऑटोमोबाइल बनाया, जिसने अमेरिकी मज़दूर वर्ग का विचार ही खड़ा किया—और जिसने सब कुछ ढहते देखा। बंद कारख़ाने, ख़ाली हुए शहर, उजड़े मोहल्ले, दूषित पानी, नशे की लतें, पुराना पड़ता बुनियादी ढाँचा, घटी हुई मज़दूरी।

यह ऐसा राज्य है जिसने उत्थान, पतन और जुझारूपन, तीनों जिए हैं। और इस सबके दौरान महिलाओं ने वह सहा जो पुरुष अब सँभाल नहीं पाते थे।

मिशिगन महिलाओं को एक झटके में नहीं मिटाता। वह उन्हें दिन-ब-दिन तीन ताक़तों से खा जाता है: – ढहता उद्योग – ख़ाली होते शहर – हर चीज़ को ज़हरीला बनाती पर्यावरणीय समस्याएँ। यहाँ महिलाओं की अनुपस्थिति एक टूटी हुई अर्थव्यवस्था का नतीजा है जो लगभग कुछ न देते हुए भी माँगती रहती है।

डेट्रॉइट की महिला – 38 वर्ष

डेट्रॉइट औद्योगिक पतन का वैश्विक प्रतीक है। खाली मोहल्ले, छोड़े हुए घर, कमज़ोर सेवाएँ, पैसों की कमी से जूझते स्कूल और पुरानी गरीबी।

यहाँ महिलाएँ जीती हैं: – अस्थायी नौकरियों के साथ – अविश्वसनीय परिवहन के साथ – फैली हुई हिंसा के साथ – असहनीय खर्चों के साथ – मज़बूत सामाजिक नेटवर्क के अभाव के साथ – परिवार की पूरी ज़िम्मेदारी के साथ।

उसे जहाँ काम मिले, वहीं करती है: सुपरमार्केट, क्लीनिक, कॉल सेंटर, रेस्तराँ, स्थानीय सहकारी संस्थाएँ।

उसकी अनुपस्थिति शहरी है: एक ऐसा शहर जो पूरी दुनिया में मशहूर है, पर उन्हें नहीं देखता जो उसे खड़ा रखती हैं।

डेट्रॉइट अपने औद्योगिक इतिहास का जश्न मनाता है। वह उन महिलाओं का जश्न नहीं मनाता जो उसकी विफलता से बच निकलीं।

फ़्लिंट की महिला – 34 वर्ष

फ़्लिंट एक राष्ट्रीय घाव है। बरसों तक ज़हरीला पानी, ज़हर से पीड़ित बच्चे, राज्य द्वारा धोखा खाए परिवार।

यहाँ की महिला ने यह घोटाला खुद भुगता: – उसने ज़हरीले पानी से खाना पकाया – उसने खतरनाक पानी से अपने बच्चों को नहलाया – वह उन संस्थाओं से लड़ी जो सबूतों को नकारती रहीं – उसने भारी सफ़ाई-समस्याओं वाले घर चलाए – उसे बिल भरने और बोतलबंद पानी खरीदने में से एक चुनना पड़ा। उसकी अनुपस्थिति पर्यावरणीय है: राज्य विफल हुआ, और क़ीमत उसने चुकाई।

फ़्लिंट सिर्फ़ एक त्रासदी नहीं है। यह इस बात का उदाहरण है कि अमेरिका में एक गरीब महिला की ज़िंदगी कितनी कम मायने रखती है।

पूर्व-कारख़ानों की महिला – 46 वर्ष

एक समय था जब मिशिगन के कारख़ाने स्थिरता देते थे: उचित मज़दूरी, एक घर, एक परिवार, एक भविष्य।

फिर सब कुछ ढह गया: काम का विदेश जाना, रोबोटीकरण, बंदियाँ, सामूहिक छँटनियाँ।

यहाँ महिलाओं को खुद को जल्दी से नए सिरे से गढ़ना पड़ा: – सुपरमार्केट – देखभाल – सफ़ाई – छोटी सेवाएँ – पार्ट-टाइम नौकरियाँ – टुकड़ों में बँटी शिफ़्टें।

भारी उद्योग से रोज़मर्रा की अस्थिरता तक।

उसकी अनुपस्थिति आर्थिक है: उसने सुरक्षा खो दी, संभावनाएँ खो दीं, वह संरक्षण खो दिया जो उसके पास तब था जब कार दुनिया पर राज करती थी।

ग्रामीण महिला – 50 वर्ष

ग्रामीण मिशिगन विशाल है: झीलों के इलाक़े, जंगल, अलग-थलग समुदाय, छोटे और धीमे क़स्बे।

यहाँ की महिला झेलती है: – कठोर सर्दियाँ – पतियों और बच्चों को जकड़ती नशे की लतें – दूर की स्वास्थ्य सेवा – मौसमी नौकरियाँ – अकेलापन – लगभग न के बराबर परिवहन।

यह लगातार समझौते की ज़िंदगी है। न सहारा, न विकास, न मज़बूत नेटवर्क। उसकी अनुपस्थिति भौगोलिक है: वह किलोमीटरों में, ख़ामोशी में, जीवित रहने की दिनचर्या में ग़ायब हो जाती है।

उपसंहार – मिशिगन

मिशिगन ऐसा राज्य है जो अतीत के निशान और वर्तमान के नतीजे, दोनों ढोता है।

महिलाएँ डटी रहती हैं: डेट्रॉइट, फ़्लिंट, ग्रामीण इलाक़े, पूर्व-कारख़ाने, कठिन मोहल्ले, जुझारू परिवार।

पर डटे रहते हुए वे ग़ायब हो जाती हैं: – ढहते बुनियादी ढाँचे के बीच – प्रदूषित पानी के बीच – अस्थायी नौकरियों के बीच – आधे ख़ाली शहरों के बीच – विफल अर्थव्यवस्थाओं के बीच।

मिशिगन अपने गौरवशाली अतीत का जश्न मनाता है। वर्तमान की क्रीमत महिलाएँ चुकाती हैं।

चिंतन – मिशिगन

हर राज्य अनुपस्थिति का एक अलग रूप दिखाता है। मिशिगन वह रूप दिखाता है जो ढाँचों की नाजुकता से पैदा होता है: जब कारखाना गिरता है, समुदाय गिरता है। और जब समुदाय गिरता है, तो खड़ी रह जाती है महिला—अकेली।

यहाँ महिलाओं की अनुपस्थिति एक पूरी ज़िंदगी का नतीजा है, जो काम, बच्चों, घर, आर्थिक संकटों, पर्यावरणीय आपदाओं, सेवाओं में कटौती और शहरी हिंसा की दरारें भरते हुए बीती।

यह वह अमेरिका है जो अब काम नहीं करता और फिर भी उम्मीद करता है कि महिलाएँ काम करती रहें। और इसीलिए यह अध्याय निर्णायक है।

मिनेसोटा

मिनेसोटा ऐसा राज्य है जो सबको पसंद आता है: झीलें, प्रकृति, व्यवस्था, शिक्षा, सभ्यता, लंबी सर्दियाँ और एक “शांत” जीवन। बाहर से यही दिखता है।

भीतर से यह अलग है। यह ऐसा राज्य है जो आधा साल जमा देने वाली ठंड में जीता है, जहाँ के समुदाय खुले दिखते हैं पर असल में बहुत बंद हैं, जहाँ के शहर खुद को प्रगतिशील बताते हैं पर गहरे नस्लीय तनाव छिपाते हैं, जहाँ की सामाजिक व्यवस्था तभी तक काम करती है जब तक तुम काम करती रहो—और महिलाएँ हमेशा काम करती रहती हैं।

यहाँ महिला अराजकता में गायब नहीं होती। वह दिखावटी शालीनता में गायब होती है। खामोशी में। ठंडेपन में। उन “कोमल” अपेक्षाओं में जो उसे खुली हिंसा से भी ज़्यादा कुचलती हैं।

मिनेसोटा हमला नहीं करता। वह खा जाता है।

आप्रवासी मोहल्लों की महिला – 32 वर्ष

मिनेसोटा में संयुक्त राज्य अमेरिका के सबसे बड़े और सबसे दिखने वाले आप्रवासी समुदायों में से एक है: सोमाली, होंग, इथियोपियाई और लातीनी। और महिलाएँ इन समुदायों का दिल हैं।

वे दो दुनियाओं के बीच जीती हैं: – अपनी मूल संस्कृति – कठोर और महँगी अमेरिकी व्यवस्था। वे काम करती हैं: – स्वास्थ्य सहायिकाओं के रूप में – सफ़ाईकर्मियों के रूप में – खानपान में – बेबीसिटर के रूप में – ड्राइवर के रूप में – सांस्कृतिक मध्यस्थों के रूप में।

वे दो भाषाएँ बोलती हैं, बच्चे पालती हैं और बड़े परिवारों को सहारा देती हैं। बिना रुके।

उनकी अनुपस्थिति सांस्कृतिक और आर्थिक है: वे समुदायों की प्रेरक शक्ति हैं, पर समाज उन्हें सेवा देने वाली उपस्थिति की तरह बरतता है।

वे आँकड़ों के रूप में दिखती हैं, इंसानों के रूप में अदृश्य हैं।

सामाजिक कार्य में काम करने वाली महिला – 38 वर्ष

मिनेसोटा सामाजिक सेवाओं में भारी निवेश करता है। पर असली काम करने वाली हमेशा महिलाएँ होती हैं: पारिवारिक केंद्रों में, शैक्षिक परियोजनाओं में, आश्रय-गृहों में और सार्वजनिक संस्थाओं में।

उन्हें “सामाजिक देवदूत” कहा जाता है। असल में वे कम वेतन वाली और ज़रूरत से ज़्यादा काम से लदी कामगार हैं।

सहने में कठिन कहानियाँ, लगातार आपात स्थितियाँ, बिना पर्याप्त साधनों के मदद माँगते लोग, भावनाओं का लगातार प्रबंधन।

उनकी अनुपस्थिति पेशेवर है: वे समाज के सबसे नाजुक हिस्से को सहारा देती हैं, पर व्यवस्था उन्हें सहारा नहीं दे पाती।

लंबी सर्दियों की महिला – 50 वर्ष

सर्दियों में मिनेसोटा किसी दूसरे ग्रह जैसा है: महीनों तक बर्फ़, बर्फ़ीली सड़कें, मजबूरी का अकेलापन। भीतरी इलाकों और छोटे क़स्बों में महिलाएँ जीती हैं: –

हर चीज़ से किलोमीटरों दूर – नाममात्र की स्वास्थ्य सेवा – नीरस दिनचर्या – बिना किसी सहारे के घरेलू समस्याएँ – ऐसी सर्दी जो दिमाग में भी घुस जाती है।

जब तुम दूर होती हो, तुम अकेली होती हो। और जब तुम मिनेसोटा में अकेली होती हो, तो कोई नहीं देखता।

उसकी अनुपस्थिति भौगोलिक है: वह बर्फ़ में, दूरी में, ख़ामोशी में ग़ायब हो जाती है।

आवश्यक क्षेत्र – 40 वर्ष

मिनेसोटा ऐसा राज्य है जो तीन स्तंभों पर टिका है: – स्वास्थ्य सेवा – शिक्षा – खाद्य वितरण।

तीन क्षेत्र जिन पर महिलाओं का दबदबा है। लंबी शिफ़्टें, ऊँचे स्तर की ज़िम्मेदारी, स्टाफ़ की कमी और लगातार तनाव।

यही वे हैं जो तापमान -25 तक गिरने पर भी राज्य को चलाए रखती हैं। यही वे हैं जो बीमार होने पर भी पीछे नहीं हट सकतीं।

उनकी अनुपस्थिति कामकाजी है: वे रुक नहीं सकतीं, पर कोई उनकी रक्षा के लिए व्यवस्था नहीं बनाता।

उपसंहार – मिनेसोटा

मिनेसोटा ऐसा राज्य है जो बाहर से ठंडा है और बाहर से ही गर्म। महिलाएँ हर चीज़ को संतुलन में रखती हैं: आप्रवासी समुदाय, सामाजिक सेवाएँ, स्वास्थ्य सेवा, स्कूल और अलग-थलग परिवार।

उनकी अनुपस्थिति तीन तत्वों से बनी है: – पाला – ख़ामोशी – बिना मान्यता की ज़िम्मेदारी। न अराजकता है, न शोर, न कोई सनसनीखेज़ हिंसा। सिर्फ़ एक निगल जाने वाली शांति है।

चिंतन – मिनेसोटा

हर राज्य अनुपस्थिति का अपना रूप दिखाता है। मिनेसोटा सबसे "शिष्ट" रूप दिखाता है: दिखावटी दयालुता के ज़रिए मिटाया जाना।

यहाँ तुम पर चिल्लाया नहीं जाता। तुम्हें खुलेआम रोका नहीं जाता। तुम पर हमला नहीं किया जाता।

बस तुम्हें अकेले काम करते रहने के लिए छोड़ दिया जाता है। और तुम्हें हमेशा काम करते रहना होता है।

मिनेसोटा वह राज्य है जहाँ महिलाएँ इसलिए अदृश्य नहीं होतीं कि वे कमज़ोर हैं, बल्कि इसलिए कि वे इतनी मज़बूत हैं कि उनकी मदद करने की ज़रूरत किसी को नहीं लगती।

और इसीलिए यह अध्याय निर्णायक है: यह दिखाने के लिए कि “अच्छे” राज्यों में भी गहरी अनुपस्थितियाँ होती हैं।

मिसिसिपी

मिसिसिपी सबसे गहरे दक्षिण का दिल है। यह ऐसा राज्य है जो आज भी अपने इतिहास का बोझ ढोता है: गुलामी, जड़ जमाई गरीबी, नस्लीय अलगाव, सेवाओं का अभाव, न्यूनतम बुनियादी ढाँचा, पैसों की कमी से जूझती शिक्षा।

यह उन जगहों में से एक है जहाँ महिला के रूप में जन्म लेने का मतलब है तीन बाधाओं के साथ शुरुआत करना: – विरासत में मिली गरीबी – कठोर पारिवारिक भूमिकाएँ – एक ऐसा राज्य जो कुछ नहीं देता। यहाँ महिलाएँ किसी एक घटना की वजह से गायब नहीं होतीं। वे इसलिए गायब होती हैं क्योंकि वे एक ऐसे समाज में जीती हैं जिसे कभी उनकी रक्षा के लिए बनाया ही नहीं गया।

मिसिसिपी में महिलाओं की अनुपस्थिति पूरी है: आर्थिक, सांस्कृतिक, स्वास्थ्य से जुड़ी, राजनीतिक, नस्लीय।

यह वह राज्य है जहाँ महिलाएँ सब कुछ थामे रखती हैं और बदले में कुछ नहीं पातीं।

डेल्टा की अफ़्रीकी अमेरिकी महिला – 40 वर्ष

मिसिसिपी डेल्टा संयुक्त राज्य अमेरिका की सबसे गरीब जगहों में से एक है। संस्कृति, संगीत और इतिहास में असाधारण रूप से समृद्ध, फिर भी राजनीतिक उपेक्षा, सेवाओं के अभाव और भारी असमानता से तबाह।

यहाँ की अफ्रीकी अमेरिकी महिला समुदाय की धुरी है: – वह बच्चों और नाती-पोतों को पालती है – वह कमज़ोर स्कूलों में काम करती है – वह परिवार की देखभाल करती है – वह वृद्धाश्रमों में शिफ्टों में काम करती है – वह घर और इमारतें साफ़ करती है – वह पूरे मोहल्ले को सहारा देती है।

उसके बिना डेल्टा एक दिन में ढह जाएगा।

उसकी अनुपस्थिति ऐतिहासिक और नस्लीय है: राज्य ने उसे कभी किसी चीज़ के केंद्र में नहीं रखा। वह सब कुछ देती है, कुछ नहीं पाती।

सबसे ज़्यादा गरीबी वाले ग्रामीण इलाकों की महिला – 48 वर्ष

ग्रामीण मिसिसिपी विशाल है। छोटे-छोटे क़स्बे, दूर-दराज़ के घर, हर जगह चर्च और लगभग न के बराबर अस्पताल।

महिला जीती है: – हर चीज़ से मीलों दूर – बिना इलाज की पुरानी स्वास्थ्य समस्याओं के साथ – न्यूनतम परिवहन के साथ – मौसमी या अस्थायी नौकरियों के साथ – पुराने, सँभालने में मुश्किल घरों के साथ – अकेलेपन के एक ऐसे एहसास के साथ जो जीने का तरीका बन जाता है।

अगर कोई आपात स्थिति आती है, तो कोई समय पर नहीं पहुँचता।

उसकी अनुपस्थिति भौगोलिक है: वह इतनी दूर रहती है कि उस तक पहुँचा नहीं जा सकता और इतनी गरीब है कि उसकी सुनी नहीं जाती।

सबसे निचली सेवाओं में काम करने वाली महिला – 33 वर्ष

मिसिसिपी देश के सबसे कम मज़दूरी वाले राज्यों में से एक है। और ये नौकरियाँ, बिना किसी अपवाद के, महिलाओं के हिस्से आती हैं।

यहाँ की महिला काम करती है: – सस्ती चैन दुकानों में – सस्ते सुपरमार्केट में – फ़ास्ट-फ़ूड रेस्तराँ में – सफ़ाई में – बीमारों और बुजुर्गों की अनौपचारिक देखभाल में – बिना पंजीकरण की बेबीसिटिंग में।

कठिन शिफ्टें, कोई अधिकार नहीं, कोई तय समय नहीं। वह कड़ी मेहनत करती है, कम कमाती है, और किसी तरह जीती है।

उसकी अनुपस्थिति आर्थिक है: उसके काम के बिना मिसिसिपी धीरे-धीरे थम जाएगा, पर राज्य उसके साथ ऐसा बर्ताव करता है मानो कोई भी उसकी जगह ले सकता हो।

धार्मिक परंपरा में फैंसी महिला – 55 वर्ष

मिसिसिपी में धर्म एक कारक नहीं है। वह एक व्यवस्था है।

यहाँ की महिला को: – माँ होना चाहिए – श्रद्धालु होना चाहिए – परिवार का सहारा होना चाहिए – नैतिक आदर्श होना चाहिए – “मज़बूत” होना चाहिए, तब भी जब वह मज़बूत न हो।

वह कलंक के बिना अलग नहीं हो सकती। वह फ़ैसले सुने बिना अपनी ज़िंदगी नहीं बदल सकती। वह खुद को परिवार से पहले नहीं रख सकती।

उसकी अनुपस्थिति सांस्कृतिक और भावनात्मक है: उसे सबको सहारा देने के लिए पाला गया, पर उसे कोई सहारा नहीं देता।

उपसंहार – मिसिसिपी

मिसिसिपी बदलने में सबसे धीमा राज्य है। और इस धीमेपन में महिलाएँ खोजाती हैं।

यही वे हैं जो स्कूल, दुकानें, चर्च, परिवार और समुदाय चलाए रखती हैं। यही वे हैं जो वह थामे रखती हैं जो सरकार नहीं थाम पाती।

फिर भी वे एक ऐसे ढाँचे में गायब हो जाती हैं जो उन्हें कभी केंद्रीय नहीं मानता।

यहाँ अनुपस्थिति कोई दुर्घटना नहीं है। वह एक परंपरा है।

चिंतन – मिसिसिपी

हर राज्य अनुपस्थिति का एक रूप दिखाता है। मिसिसिपी सबसे पुराना और सबसे क्रूर रूप दिखाता है।

यहाँ महिलाएँ सिर्फ़ अदृश्य नहीं हैं। उन्हें हल्के में लिया जाता है। उन्हें एक प्राकृतिक संसाधन माना जाता है: हमेशा उपलब्ध, कभी संरक्षित नहीं।

मिसिसिपी एक कठोर सच दिखाता है: जब इतिहास नहीं बदलता, तो सबसे भारी क्रीमत महिलाएँ चुकाती हैं।

इसीलिए यह अध्याय इस खंड के सबसे महत्वपूर्ण अध्यायों में से एक है: क्योंकि यह दिखाता है कि जब राज्य पूरी पीढ़ियों को छोड़ देता है और उम्मीद करता है कि महिलाएँ उन्हें बचा लेंगी, तो क्या बचता है।

फर्दिनांदो फ्रेगा